स्थानाङ्गसूत्र भा. १ पहलेकी

विषयानुक्रमणिका

अनुक्रमाङ्क	विषय	पृष्ठाङ्क
	पहलास्थान	
१	मङ्गलाचरण	१–९
२	सुधर्मस्वामीका जंबूस्वामीको उपदेश	१०–१४
३	आत्माके एकत्वका निरूपण	१५–३२
४	क्रियाके एकत्वका निरूपण	३३–३७
५	लोकके एकत्वका निरूपण	३८–४०
६	अलोकके एकत्वका निरूपण	४१–४५
७	धर्मके एकत्वका निरूपण	४६–४७
८	अधर्मके एकत्वका निरूपण	४८–५३
९	बंधके एकत्वका निरूपण	५४–५८
१०	मोक्षके एकत्वका निरूपण	५९–६३
११	पुण्यके एकत्वका निरूपण	६४–७०
१२	पापके एकत्वका निरूपण	७१–७४
१३	आस्रवके एकत्वका निरूपण	७५–७६
१४	संवरके एकत्वका निरूपण	७७–७९
१५	वेदनाके एकत्वका निरूपण	८०
१६	निर्जराके एकत्वका निरूपण	८१–८२
१७	जीवके स्वरूपका निरूपण	८३–८४
१८	विक्रियाके स्वरूपका निरूपण	८५–८६
१९	मनके एकत्वका निरूपण	८७–८८
२०	वाणीके एकत्वका निरूपण	८९–९०
२१	उत्पत्तिके एकत्वका निरूपण	९१–९२
२२	विगति–विनाश आदिके एकत्वका निरूपण	९३–९४
२३	च्यवन–आदिका निरूपण	९५–९६
२४	संज्ञा आदिके एकत्वका निरूपण	९७–९८
२५	वेदना आदिके एकत्वका निरूपण	९९–१००
२६	मरण आदिका निरूपण	१०१–१०२

२७	अधर्म प्रतिमाके एकत्वका निरूपण	१०३–१०४
२८	धर्म प्रतिमाके एकत्वका निरूपण	१०५–
२९	मनके एकत्वका निरूपण	१०६–१०८
३०	वचनके एकत्वका निरूपण	१०९–११०
३१	काय व्यायामके एकत्वका निरूपण	१११–११४
३२	कायव्यायामके भेदोंका निरूपण	११५–११६
३३	ज्ञानादिके एकत्वका निरूपण	११७–१२२
३४	समयके एकत्वका निरूपण	१२३
३५	प्रदेश आदिके एकत्वका निरूपण	१२४–१२५
३६	सिद्धि आदिके एकत्वका निरूपण	१२६–१३०
३७	शब्द आदिके एकत्वका निरूपण	१३१–१३८
३८	प्राणातिपात आदिके एकत्वका निरूपण	१३९–१४५
३९	प्राणातिपात विरमण आदिके एकत्वका निरूपण	१४६–१४७
४०	अवसर्पिणी आदिके एकत्वका निरूपण	१४८–१५२
४१	नैरयिक आदिके वर्गणाका निरूपण	१५३–१९२
४२	जंबूद्वीपादिके एकत्वका निरूपण	१९३–१९६
४३	अनुत्तरोपपात आदि विमानवासी देवोंके शरीरके प्रमाणका निरूपण	१९७–१९८
४४	एकप्रदेशावगाढ पुद्गलोंका निरूपण	१९९
	दूसरे स्थानका पहला उद्देशक	
४५	जीव–अजीव आदिके द्वित्वका निरूपण	२००–२०८
४६	क्रिया आदिके द्वित्वका निरूपण	२०९–२३०
४७	गर्हाके द्वित्वका निरूपण	२३१–२३२
४८	भावगर्हामें प्रसन्नचन्द्रराजर्षिका द्रष्टान्त	२३३–२४३
४९	द्रव्यगर्हामें अङ्गारमर्दकाचार्यका द्रष्टांत	२४४–२४८
५०	प्रत्याख्यानकी द्विविधताका निरूपण	२४९–२५०
५१	द्रव्यप्रत्याख्यानमें राजपुत्रीका द्रष्टांत	२५१–२५३
५२	प्रत्याख्यान ज्ञानक्रिया पूर्वक करने पर मोक्ष साधक होनेका निरूपण	२५४–२६६

५३	आरम्भ और परिग्रहके अनवबाधसे धर्मादिलाभका निरूपण	२६६–२७३
५४	धर्मादि प्राप्तिमें दो कारणोंका निरूपण	२७४–२७६
५५	दो समयका और उन्मादके द्वित्वका निरूपण	२७७–२८०
५६	दो प्रकारके दण्डका निरूपण	२८१–२८२
५७	दो प्रकारके दर्शनका निरूपण	२८३–२८७
५८	दो प्रकारके ज्ञानका निरूपण	२८८–२९३
५९	श्रुत चारित्र्यके द्विविधताका निरूपण	२९४–३०८
६०	पृथिव्यादि जीवके द्विविधताका निरूपण	३०९–३१७
६१	नारकादिकोंकी द्विविधताका निरूपण	३१८–३२३
६२	भव्यविशेषोंके कर्त्तव्यकी द्विविधताका निरूपण	३२४–३२८

दूसरे स्थानका दूसरा उद्देशक

६३	देवनारकादिकोंके कर्मबन्ध और उनके वेदनाका निरूपण	३२९–३३४
६४	नारकादिकोंके गति और आगति रूप नारकादि चोवीस दण्डकोंका निरूपण	३३५–३४९
६५	अधोलोक ज्ञानादि विषयक आत्माके द्वैविध्यका नि.	३५०–३६०

दूसरे स्थानका तीसरा उद्देशक

६६	तीसरे उद्देशककी अवतरणिका	३६१
६७	शब्दके द्वैविध्यका निरूपण	३६२–३६६
६८	पुद्गलोंके संघात और भेदके कारणका निरूपण	३६७–३७५
६९	शब्दादिके आत्त–अनात्त आदि भेदोंका निरूपण	३७५–
७०	जीवके धर्मका निरूपण	३७६–३८५
७१	जीवके उत्पात और उद्वर्तनादि धर्मके द्वैविध्यताका निरूपण	३८६–३९७
७२	भरत और ऐरवतादि क्षेत्रका निरूपण	३९८–४०१
७३	वर्षधरादि पर्वतोंके द्वैविध्यताका निरूपण	४०२–४१७
७४	पद्मद्रहादि द्रहके द्वैविध्यका निरूपण	४१८–४२५
७५	काललक्षण पर्याय धर्मका निरूपण	४२६–४३२

७६	कालकेव्यञ्जक ज्योतिष्कोंका निरूपण	४३३–४३७
७७	जम्बूद्वीपकी वेदिकाका निरूपण	४३८–४६०
७८	द्वीपसमुद्रोंके इन्द्रका निरूपण	४६१–४६७

दूसरे स्थानका चौथा उद्देशक

७९	चौथे उद्देशककी अवतरणिका	४६८–
८०	समयादिका निरूपण	४६९–४७९
८१	ग्रामादि वस्तु विशेषका जीवाजीवरूपका निरूपण	४८०–४८७
८२	बन्धका निरूपण	४८८–४९५
८३	आत्माके निर्वाण (मोक्ष) का निरूपण	४९६–४९९
८४	केवलि प्रज्ञप्त धर्मलाभका निरूपण	५००–५०१
८५	पल्योपम सागरोपमका निरूपण	५०२–५०८
८६	क्रोधादिकोंके स्वरूपका निरूपण	५०९–५१०
८७	असिद्ध जीवोंके स्वरूपका निरूपण	५११–५१५
८८	प्रशस्त–अप्रशस्त मरणका निरूपण	५१६–५२६
८९	लोभके स्वरूपका निरूपण	५२७–५२८
९०	बुद्ध–मूढ आदि जीवोंका निरूपण	५२९–५३०
९१	ज्ञानावरणीयादि कर्मोंके द्वैविध्यका निरूपण	५३१–५३९
९२	मूर्च्छाके स्वरूपका निरूपण	५४०
९३	आराधनाके स्वरूपका निरूपण	५४१–५४३
९४	तीर्थंकरके स्वरूपका निरूपण	५४४–५४५
९५	तीर्थंकर प्ररूपित भावोंका निरूपण	५४६–५४८
९६	भवनपत्यादिकोंकी स्थितिका निरूपण	५४९
९७	देव संबंधी वक्तव्यता	५५०–५५१
९८	जीव और पुद्गलके स्वरूपका निरूपण	५५२–५५७

तीसरे स्थानका पहला उद्देशक

९९	तीसरे स्थानककी अवतरणिका	५५८
१००	इन्द्रके स्वरूपका निरूपणम्	५५९–५६२
१०१	विकुर्वणाके स्वरूपका निरूपण	५६३–५६६
१०२	नैरयिकोंके स्वरूपका निरूपण	५६७–५६९

१०३	परिचारणा के स्वरूपका निरूपण	५७०–५७४
१०४	योगके स्वरूपका निरूपण	५७५–५८३
१०५	आरम्भादि करणका और क्रियान्तके फलके स्वरूपका निरूपण	५८४–५८९
१०६	गुप्ति और दण्डके स्वरूपका निरूपण	५९०–५९३
१०७	गर्हा और प्रत्याख्यानके स्वरूपका निरूपण	५९४–५९६
१०८	वृक्षके दृष्टान्तसे पुरुषके स्वरूपका निरूपण	५९७–६०३
१०९	तिर्यंच–जलचर–स्थलचर–खेचरकी त्रिविधताका निरूपण	६०४–६१०
११०	नैरयिकादिकों की लेश्याका निरूपण	६११-६१४
१११	ज्योतिष्कोंके चलन प्रकारका निरूपण	६१५–६१७
११२	उत्पातरूप लोकान्धकारादिका निरूपण	६१८–६२६
११३	धर्माचार्यादिकोंके अशक्य प्रत्युपकारित्वका निरूपण	६२७- ६४३
११४	धर्मके भवच्छेद में कारणताका निरूपण	६४४-६४६
११५	कालविशेषका निरूपण	६४७–६४८
११६	पुद्गलके धर्मका निरूपण	६४९–६५३
११७	दण्डक सहित जीवधर्मका निरूपण	६५४–६५५
११८	योनिके स्वरूपका निरूपण	६५६–६६३
११९	तीर्थका निरूपण	६६४–६६६
१२०	कालधर्मका निरूपण	६६७–६७२
१२१	बादर तेजस्कायादिकोंके स्थितिका निरूपण	६७३- ६७७
१२२	क्षेत्रविशेषके स्वरूपका निरूपण	६७८–६८१
१२३	व्रतरहितोंके और व्रतसहितोंके उत्पत्तिका निरूपण	६८२–६८६
१२४	देवके शरीरका मान (नाप) का निरूपण	६८७
१२५	देवके शरीर बद्ध तीन सूत्रका निरूपण	६८८–६८९

समाप्त